RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-10
October-2018
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

# उर्दू में रामकाव्य परंपरा

डॉ. प्रदीप कुमार सिंह

अध्यक्ष– हिन्दी विभाग साठये महाविद्यालय (मुंबई विद्यापीठ) मुंबई – महाराष्ट्र

उर्दू ,भारत की गंगा–जमुनी संस्कृति एवं धार्मिक और भाषायी संगम की प्रतीक है। उर्दू शायरी पर हिंदू संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है। उर्दू काव्य में राम साहित्य की प्रासंगिकता के संदर्भ में बात करते देवमाला और रामायण पर बात करना जरूरी हो जाता है। The Random House Dictionary of English में देवमाला का अर्थ यों दिया गया है IMyth is traditional or legendary Story usually concerning some super human being or some alleged person or event with or without a determinable basis of facts or a natural explanation especially a traditional or legendary story that is concerned with dieties or demi & gods and the creation or the world with its habitants अर्थात् देवी–देवताओं से संबंधित कहानियाँ अथवा उन व्यक्तियों से संबंधित कहानियाँ जो धरती पर देवी–देवताओं का प्रतिनिधित्व करती हैं देवमालाई कहानियाँ' कहलाती हैं। The concise oÛford dictionary में देवमाला का अर्थ है, Mythology is a body of myth i.e- traditional narrative usually involing supernatural or fancied persons etc- nd embodying popular ideas on natural and social phenomena- अर्थात् 'देवमाला' में दैवी, काल्पनिक और आदर्श व्यक्तियों अथवा घटनाओं का बयान किया जाता है। हार्न बी. प्राचीन काल से लोकशैली में चली आ रहो धार्मिक कहानियों को देवमाला' कहते हैं । फीजर के अनुसार ,पारंपरिक अनुष्ठान और धार्मिकता से जड़ित भावनिक कहानियाँ जो विशिष्ट व्यक्तियों से जुड़ी हैं। देवमाला के अंतर्गत आती हैं। कार्ल योंग 'देवमाला' को ऐसी आर्कीटाइप्स मानता है जो जनमानस की सामूहिक समझ अथवा स्मरण शक्ति में वर्षों से सुरक्षित हैं। ये घटनाएँ,कहानियाँ अथवा प्रसंग अथवा विचार, मानव जीवन शैली, मानव के इतिहास–भूगोल, विचार–कृति आदि से जड़ित होते हैं। ' देवमाला' तत्वों में दो बातें महत्वपूर्ण होती हैं, एक तो यह कि इन का संबंध धर्म से होता है तथा दूसरे यह कि इन में बहुत समझ से परे होते हैं।

उर्दू शायरी में हिन्दू देवमाला' का दो प्रकार स प्रयोग हुआ है। एक तो धार्मिक ग्रंथों से देवी–देवताओं की कहानियाँ सीधे–सीधे ले ली गई हैं अथवा अपनी–अपनी पसंद और महत्व के अनुसार विशेष प्रसंगों को काव्यबद्ध किया गया है।

'रामायण, हर जमाने, हर समय, हर समाज की किताब है। रामायण भारतीय संस्कृति आर साहित्य का मूल्यवान विरसा है। रामायण एक ऐसा शाहकार है जिसमें जिंदगी के हर पहलू पर प्रकाश डाला गया है। एस. नारायण राव रामायण के महत्व पर प्रकाश डालते कहते हैं, रामायण एक नैतिक और धार्मिक आलेख है। एक लाभकारी पथ – प्रदर्शक है जो सफल जीवन जीने के गुर सिखलाता है। श्रामायणश की विषयवस्तु में राज्य प्रशासकीय प्रबंधन और राजनीति की बारीकियाँ निहित हैं। रामायण में हमें राजा–प्रजा,
अभिभावक–संतान, भाई–बहन, पति–पत्नी, मित्र, सेवक, गुरु–शिष्य आदि प्रत्येक व्यक्ति के दायित्वों और कर्तव्यों पर संतोषजनक एवं शाश्वत चर्चा प्राप्त होती है। रामायण, एक उत्तम साहित्यिक कृति भी है। जिस प्रकार से रामायण के विभिन्न पात्र अपने दुख–सुख का प्रकटीकरण करते हैं, अपने दायित्वों–जिम्मेदारियों के साथ जीते हैं ,वह इतना सहज और प्राकृतिक है कि इसमें भारतीयों के दैनंदिन जीवन की अत्युत्तम झाँकी सहज देखने को मिलती है।

बशेश्वर प्रसाद 'मुनव्वर' लखनवी के 'रामायण' के गद्य अनुवाद की भूमिका में उन्होंने 'रामायण' की महत्ता का रेखांकित करते हुए लिखा है, प्राचीन काल के बा–कमाल ऋषियों ने रामायण की एक वृक्ष से उपमा दी है। ब्रह्म से इस वृक्ष का जन्म हुआ है। ज्ञान, इस वृक्ष की कोंपलें हैं। सात कांड, सात शाखाएँ हैं। चौबीस हजार श्लोक पत्ते और पांच सौ सर्ग टहनियाँ हैं। इस वृक्ष का पोषण ऋषियों के कर–कमलों से हुआ है। मानवी जीवन के कुल उद्देश्य श्रामायणश के वसीले से प्राप्त हो सकते हैं – अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष इस वृक्ष के मीठे फल हैं।

मर्यादा पुरुष राम को दशावतार में से सातवां अवतार माना जाता है। वे अपनी वीरता, मातृ–पितृ भक्ति, वचनप्रियता, मानवता, एकपत्नीव्रत, प्रजा के प्रति प्रेम आदि के कारण बहुत लोकप्रिय हैं। रामचंद्र जी के जीवन और घटनाओं को संस्कृत भाषा में वाल्मीकि ने तथा हिंदी में तुलसीदास ने रचनाबद्ध करके घर–घर में पहुंचा दिया। मराठी में श्भावार्थ रामायणश , 'समर्थ रामायण' और 'मोरोपंत रामायण' , तमिल में 'कुम्भ रामायण' , गुजराती में 'राम बाल– चरित', तेलुगु में 'रंगनाथ रामायण' , बगला में 'कृतिदास रामायण' , उड़िया में 'हलदास रामायण' आदि लिखी गई हैं, पर तुलसीदास के श्रामचरितमानसश जैसी लोकप्रियता और किसी को प्राप्त नहीं हो सकी।

इस दृष्टि से आइए ,उर्दू भाषा में राम साहित्य की प्रासंगिकता से परिचय प्राप्त करें।
'रामायण' के उर्दू में कई अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें पद्य–बद्ध अनुवाद अधिक हैं। ये अनुवाद तुलसीकृत श्रामायणश के हैं। वाल्मीकी रामायण के भी कुछ अनुवाद हैं, पर बहुत कम। अली जव्वाद जैदी, डॉ. मुहम्मद अजीज, सय्यद यहया नशीत, राम पंडित, बानो सरताज, अजय मालवी आदि न समय–समय पर उर्दू में अनुवादित 'रामायणों ' की सूची तैयार की है, इनके आधार पर एक सूची यहाँ दी जाती है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

रामायण (१८५१) : मुंशी जगन्नाथ लाल खुशतर ने जो उर्दू, फारसी, अरबी और संस्कृत के विद्वान थे, मसनवी की तर्ज पर श्रामायणश शीर्षक से अनुवाद किया। इसके रचना काल के संबंध में निम्नलिखित पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं—

हुई जब खत्म यह नज्म दिल—अफरोज

हुआ फिर तालिब—ए—तारीख़ उस ओर।

वहीं उर्दू से लिख कर बर—सर—ए बैज

कहा हातिफ ने के है चश्मा—ए—फैज (१८५१ ई. १२६८ हि.)

१६२४ तक नवल किशोर प्रेस से इसके १६ संस्करण प्रकाशित हुए।

वाकये—राम चन्दर (१५५८) रू पंडित सूरजभान ने रामायण का 'वाकये

रामचन्द्र' शीर्षक से अनुवाद किया।

अध्यात्म रामायण (१६५८) : गुरु रामायण

रामायण रू नज्म उर्दू (१८६६) य उदू, फारसी, संस्कृत, अंग्रेजी के ज्ञाता

शंकर दयाल श्फरहतश ने १८६६ में श्रामायणश का अनुवाद श्नज्म उर्दू शीर्षक से किया। १६१५ तक यह ६ बार प्रकाशित हुई। खादिम हुसैन अफसोस ने तारीख निकाली : जो रामायण उर्दू में 'फरहत' ने लिखी

पसंदीदा दीदा—ए—नुक्ता संजां।

लिख 'अफसोस' तारीख इरादत की रू से

हुई यह कथा साफ खुर्शीद ईमां।। (१८६६हि.)

मुंशी झाऊलाल 'महजूर' ने हिजरी सन् में तारीख निकाली:

नज्म—ए—रंगीन में किया जोश बहार

तर जबान तारीफ में सोसन हुई

फिर सन हिजरी लिखा श्महजूरश ने

तर्जुमा उर्दू में रामायण हुई (१२८३ हि.)

अद्भुत रामायण (१८७०) रू अनुवाद रू शंकर दयाल 'फरहत'

तुलसी कृत रामायण (१८८६) रू मुंशी बांके बिहारी लाल 'बहार' ने मसनवी

की तर्ज पर अनुवाद करते हुए कहा कि मैंने संक्षेप में इसे प्रस्तुत किया है :

है तुलसी कृत दास जी की

लिखा मतलब, इबारत में कमी की।

रामलीला (१८८३) रू मुंशी राम सहाय श्तमन्नाश ने मसनवी के रूप में अनुवाद किया.

वायसराय वहमी (१८६०) रू पद्यबद्ध यह रामायण पूरी की पूरी एक काफिए में अनूदित है।

रामायण महेर (१६१४) रू सूरज नारायण श्महेरश ने अनुवादक की भूमिका

के अंतर्गत लिखा है, मेरी हार्दिक इच्छा और लेखकीय परिश्रम की फलश्रुति यह अनुवाद है। इसे मात्र तुलसीकृत रामायण का अनुवाद नहीं समझना चाहिए, क्योंकि मैंने 'वाल्मीकि रामायण', 'अध्यात्म रामायण' और 'योग वाशिष्ठ' से भी विषय ग्रहण किए हैं।'

रामायण रू द्वारिका प्रसाद श्उफक़श देहलवी ने संपूर्ण रामायण का एक में अनुवाद किया। यह अनुवाद दर—अनुवाद है। ज्ञानी परमेश्वर दयाल के 'वाल्मीकि रामायण' के गद्य अनुवाद (१८६४) पर से 'उफक' ने रामायण का पद्यानुवाद किया।

पुष्पक रामायण रू हरि नारायण शर्मा 'साहिर' ने ब—तर्जे नौटंकी (नाटक में) —रामायण' का अनुवाद किया।

रामायण तुलसी कृत रू सूरज प्रसाद तसब्बुर ने तुलसी कृत अस्ल मंजूम तर्जुमा किया।

मुसद्दस रामायण रू बनवारी लाल श्शोलाश

राम कहानी रू नफीस खलीली

रामायण रू मेहदी नजमी

राम गीतारू शिव प्रसाद साहिल

रतन रामायण मंजूम रू पंडित रैन चंद जी 'रतन'।

राम कथा रू कृष्ण सहाय 'हुनर' गुरदासपुरी

सरवर रामायण : जानकी बाबा सानवाल दास मेहरोत्रा

रामायण : जानकी प्रसाद 'मैकश' जायसी

रामायण नानक: नानक चंद नानक लखनवी

रामायण वाल्मीकि : परमेश्वर दयाल 'मुख्तार'

रामायण सूर कृतः मुंशी नत्थूलाल

रामायण राम विलास : ईश्वरी प्रसाद

रामायण शब्दार्थ प्रसाद : महाराजा बनारस

रामायण : पंडित विश्वंभर नाथ सप्रू श्साबिरश (उनकी मृत्यु के कारण काय अपूर्ण रह गया।)

रामायण मंजूम : पंडित राधेश्याम शर्मा

मंजूम राम कथा : हफीज जालंधरी

रामायण फिराकी (जिल्द १) १६८३ रू राय सिद्धनाथ बली 'फिराकी'

दरियाबादी

रामायण फिराकी (जिल्द २) १६८४ रू राय सिद्धनाथ गद्य अनुवादों में प्रमुख है।

रामायण गद्य : ज्ञानी परमेश्वर दयाल १८६४

रामायण : बशेश्वर प्रसाद 'मुनव्वर' लखनवी जी।

'वाल्मीकि रामायण ' का संपूर्ण पद्यानुवाद मुंशी द्वारिका प्रसाद ने किया था जो अत्यंत लोकप्रिय हुआ। १६३१ में उनके सुपुत्र बशेश्वर प्रसाद 'मुनव्वर' कहते हैं, "सरदार संत सिंह की फरमाइश है कि मैं श्वाल्मीकि रामायणश को सरल मुहावरेदार और दैनंदिन की भाषा में उर्दू गद्य में अनुवादित करूँ। यह क्यों? श्वाल्मीकि रामायणश के उर्दू में असंख्य अनुवाद मौजूद हैं और वह भी महान योग्य और प्रतिष्ठित साहित्यकारों द्वारा किए हुए, फिर इस अनुवाद की क्या आवश्यकता है? इसका उत्तर संक्षेप में सरदार साहब की राम—भक्ति, रामायण के पात्रों को सामयिक भाषा और वर्तमान शैली में बयान करने का शौक एवं साहित्य सेवा के सिवा क्या हो सकता है?"

रामायण के कुछ अनुवाद उर्दू में ड्रामे के रूप में किए गए हैं जिनमें प्रमुख हैं :

| | | |
|---|---|---|
| सीता वनवास | : | आगा हशर काशमीरी |
| रामायण | : | बालकृष्ण 'बेताब' |
| रामायण | : | द्वारिका प्रसाद श्उफकश |
| आर्य संगीत रामायण | : | जसवंत सिंह |
| रामा | : | शिवव्रत लाल 'वरमन' |

प्रसंग विशेष पर रचित नज्में :

RRIJM 2015, All Rights Reserved

इनक अतिरिक्त उर्दू के कवियों ने 'रामचरित्र' तथा रामायण के विशेष प्रसंगों पर कविताएँ भी लिखी हैं, कुछ का यहाँ उल्लेख असंगत न होगा :

सीता वन–वास : महादेव शुक्ल
सीता स्वयंवर : गुरु नारायण
लक्ष्मण–पुरुषोत्तम संवाद : मुकुंद लाल 'खुशदिल'
रामायण अश्वमेध : तोता राम 'प्रेमी'

एक ऋषि के दाग–ए–जिगर की कहानी–राजा दशरथ की जबानीरूअली खां
श्री रामचंद्र से खिताब : जफर अली खां
सीता का इसरार : 'सरवर' जहांबादी
वनवास की सुबह : दत्तात्रय मोहन श्कैफीश
राजा दशरथ के आखिरी अलफाज मैलाराम 'वफा'
सीता हरण, जश्ने–चिरागां–राम का जिक्र–ए–खैर तथा फतह–ए– लंका
त्रिलोक चंद 'महरूम'
तारा की फरियाद : जगत मोहन 'खां'
दशहरा अश्नान शाद आरिफी
वन–वासियों की लंका से रुखसती : महाराजा बहादुर 'बर्क'
भगवान राम की अजमत : मुनव्वर लखनवी
गुलदस्ता रामायण : लाला दीवान चंद
लव और कुश कांड : सत्यप्रकाश 'मेहताब'
राम : डॉ. सर मुहम्मद इकबाल
रामायण का एक सीन : बृज नारायण 'चकबस्त'
लव और कुश की लड़ाई : तोता राम प्रेमी
गंगाजी की कथा : अली जव्वाद जैदी
हनुमान स्तुति : अंबर प्रसाद श्अहबरश जैदपुरी
रामायण, बच्चों के लिए : सावित्री
भीलनी के बेर : राज बहादुर 'भूषण'
भरत मिलाप लाला दौलत राम
सीता जी अशोक वाटिका में : रलिया राम शर्मा
सीता जी : नौबत राय 'नजर'

राम साहित्य की प्रासंगिकता :
उर्दू शायर राम के व्यक्तित्व से प्रभावित हैं। आदर्श पुरुष, मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्र के गुण । विशेष से लेकर रामायण के महत्वपूर्ण प्रसंगों पर उर्दू में कविताएँ लिखी गई। एक संक्षिप्त अवलोकन प्रस्तुत है–
राम और रहीम उर्दू के शायर राम और रहीम के नाम साथ–साथ लेकर राम के प्रति श्रद्धा प्रकट करते हैं। गुलाम हुसैन अचलपुरी कहते हैं– :

मुसलमान अल्लाह का नाम बोलें
हिंदु भी हर–हर जपें, राम बोले

मंशा–उर रहमान मंशा का कहना है श्राम बोलो या रहीम बोलो बात एक ही है:

बंदा है कोई राम का, कोई रहीम का।
हर कोई नाम लेता है, रब्बे–करीम का।

'बशीद बद्र' का विचार आज की परिस्थितियों पर कटाक्ष है, जहाँ भले–बुरे की पहचान करना कठिन हो गया है:

हजारों भेस में फिरते हैं राम और रहीम।
कोई जरूरी नहीं, भला, भला ही लगे।

राम का व्यक्तित्व:
'रामायण ' 'राम' है और 'राम रामायण' । राम आदर्शपुरुष हैं। उनके चरित्र का प्रत्यक्ष पक्ष उज्ज्वल है। वे सर्वगुण–संपन्न हैं। उनके गुणों का विवेचन एस. नारायण राव इन शब्दों में करते हैं, ''रामायण वैयक्तिक गुणों एवं चरित्र पर एक शानदार आलेख है। दानशीलता, विशाल–हृदयता, कृपा–करुणा, क्षमा, क्रोध–नियंत्रण, सत्य, साहस, वीरता, मृदुभाषिता, स्नेहशीलता, गर्वहीनता, वचनबद्धता आदि ऐसे गुण हैं, जिन्हें इंसान में होना चाहिए। श्रीराम इन गुणों की खान हैं।''
उर्दू जनमानस की भाषा है। भारतीयों की भाषा है। उर्दू साहित्य में राम यहाँ–वहाँ हर जगह नजर आते हैं। आबिद हुसैन हैदरी के शब्दों में, राम का आदर्श चरित्र हिंदी काव्य की भांति उर्दू शायरी में भी मिलता है।राम के पावन चरित्र के उल्लेख से उर्दू शायरी महिमा–मंडित हुई है। इस महान व्यक्ति के सम्म जहाँ संस्कृत और हिंदी के साहित्यकारों ने शीश नवाया हा , वहां उर्दू के शायरों ने भी उन्हें श्रधा–सुमन अर्पित किये हैं रू ष्डॉ शबाब ललित कहते हैं ,
वह सीता–नाथ खुद ही ब्रहमा हैं लोगों, यह सच है शक्ल, इंसानी सो लगती है।

पीड़ितों, दुखियों, वंचितों का दुरूख हरने वाले इंसानी शक्ल में उनके बीच आकर रहने वाले और उन का उद्धार करने वाले हैं राम। श्सागर निजामीश ने बादा–ओ–मशरिक नज्म में राम के आकर्षक व्यक्तित्व, उनकी वीरता और लोकप्रियता का बखान किया है :

दिल का त्यागी रूह का रसिया खुद राजा और खुद ही प्रजा।
सब से उल्फत करने वाला कौल का सच्चा,बात का पक्का।
ध्यान की गंगा उससे फूटी ज्ञान की जमुना उससे फूटी।
सच्चाई का परचम था वह प्रेम का बांका बालम था वह।
रूह–ओ–शुजाअत, जान–ओ–शुजाअत
आन–ओ–शुजाअत, शान–ओ–शुजाअत।
अदल का पैकर राम की दुनिया शक्ति और भक्ति का सितारा ।
दोश पर उस के नूर की चादर घुघरयाले बाल मुकुट पर।
भारत प्यारा, राज दुलारा कौशल्या की आँख का तारा,

'सागर निजामी' अपनी नज्म श्रामश में दूसरे शब्दों में श्रीराम को श्रद्धा सुमन पेश करते है

शमा–ओ–हिंदी बुझ के भी, दरखशां है हनूज
राम के नूर–ओ–हिदायत से फरोजां है हनूज
जिस का दिल था एक ताक–ए–शमा–ओ–एवाने–हयात।
रूह जिस की आफताब–ओ–सुबह, इरफान–ओ–हयात।
जिंदगी की रफअतों से मंजिलों ऊंचा था वह।
आसमान–ओ–मारिफत का एक सय्यारा था वह,
सामने जिस के लरज उठा शिकोह–ओ–सखरी।
हिंदियों के दिलों में, बाकी हैं मुहब्बत राम की।

RRIJM 2015, All Rights Reserved 

मिट नहीं सकती कयामत तक हुकूमत राम की।
जिंदगी की रूह था, रूहानियत की शान था।
वह मुजस्सिम रूप में इंसान का इरफान था।

मुंशी त्रिलोक चंद 'महरूम' 'नैरंग–ओ–मआनी' नज्म में स्वीकार करते हैं कि राम नाम से मन को शांति मिलती है तथा राम चरित्र पर आधारित ग्रंथ का वाचन करने से भक्ति के अनमोल खजाने की प्राप्ति होती है :

मोहिनी सूरत तेरी, दिल के सनम–खाने में है
तू है दिल में या चराग–ओ–नूर काशाने में है।

जो सरवरे–जां–फिजा, बख्शा तसव्वुर ने तिरे
वह न सागर में, न मीना में, न पैमाने में है।
वह किताबे–पाक, जिक्रे–खैर है जिसमें तिरा
गंजे–राहत गोया वह, दुनिया के वीराने में है।

रूह को मिलते हैं क्या–क्या ख्वाब–ओ–जन्नत के मजे
किस कदर तासीर–ओ–तसकीं, तेरे अफसाने में है।
ऐ अजीजे ई–ओ–आं ए माया–ओ–आराम–ओ–जां
जिक्र इज्जत से तेरा अपने बेगाने में है।

डॉ. सर मुहम्मद इकबाल की स्बांग–ए–दराश्ज पुस्तक में श्रामश शीर्षक से एक नज्म है। आरंभ में भारत का गौरव गान किया गया है, फिर वे राम की महानता के आगे सिर झुकाते हैं :
है

राम के वजूद मे, हिंदोस्ता को नाज
अहले–नजर समझते हैं उनको इमाम–ए–हिंद।
एजाज इस चराग–ओ–हिदायत का है यही
रौशन–तर, अज सहर है जमाने में शाने–हिंद।
तलवार का धनी था, शुजाअत में फर्द था
पाकीजगी में जोश–ओ–मुहब्बत में फर्द था।

उर्दू के कसीदों की तर्ज पर इकबाल ने श्रीराम की प्रशंसा में यह न हैं, इसीलिए श्रीराम को 'तलवार के धनी' कह गये जबकि राम तीर–कमान के धनी थे... जो भी हो, इकबाल 'इस्लामी' कवि कहे जाते हैं फिर भी उन्होंने श्रीराम की स्तुति में नज्में लिखी यह बहुत बड़ी बात है। हिंदू धर्म के संतों व धार्मिक व्यक्तियों पर नज्मे लिखने की शुरुआत का सेहरा इकबाल ही के सिर जाता है।

बशेश्वर प्रसाद 'मुनव्वर' लखनवी राम के प्रति भावनाओं को प्रकट करते हुए कहते हैं कि राम के आदर्श का यदि कोई पूर्णरूपेण पालन करे तो पूर्णत्व को प्राप्त कर सकता है :

साबित है कि मैथॉलोजी है जिक्रे–पाक–ओ–राम
आज तक अजमत का जिनकी है हरेक दिल में कयाम।
तजकेरा जिन का रहा है, घर–घर सुबह–ओ–शाम
कारनामे जिन के हैं विरदे–जबान –ओ–खास–ओ–आम।
राम के जरीं उसूलों पर जो आमिल हो गया
आदमी दुनिया में वह, इंसान–ओ–कामिल हो गया।

'सलाम' मछलीशहरी ने अयोध्या के राजा, दिलों के राजकुमार राम का स्वागत श्बनबास के गीत' नज्म में किया है :

आओं आओं , अयोध्या के राजकुमार
करू तुझ पे न्योछावर फूलों का हारद्य ... आओं ... आओं
तुम्हें चौदह बरस चार लम्हे लगें
और वचन की भी रह जाये लाज। ....तुम्हीं पहनों ये ताज
हाँ मुबारक हो तुमको ये राज।
अयोध्या में आ जाये फिर से राज
अयोध्या में आ जाये फिर से बहार।
आओ आओ अयोध्या के राजकुमार
करूँ तुझ पे न्योछावर फूलों के हार ।।

जफर अली खां ने 'श्रीराम चंदर से खिताब' नज्म में गर्व से यह स्वीकार किया है कि भारतीय संस्कृति के गौरव राम से आज भी भारत का नाम रौशन है :

मैं तेरे शेवा–ओ–तसलीम पे सिर धुनता हूँ
के वह एक दूर की निस्बत तुझे इस्लाम से है।
हो वह छोटों की इताअत, के बड़ों की शफकत
जिंदा दोनों की हकीफत तेरे पैगाम से है।
तेरी तालीम हुई नजर–ओ–खुराफात–ओ–फिरंग
ब्रह्मा को यह गिला गर्दिश–ओ–अय्याम से है।
नक्शा–ओ–तहजीब–ओ–हुनूद अब भी नुमायां है अगर
तो वह सीता से है, लक्ष्मण से है, राम से है।

राम के चमत्कारों से भक्तजन अभिभूत हैं....विशेष रूप से वह चमत्कारी स्पर्श जो पाषाण को जीवनदान दे देता है। अहिल्या का राम–चरणस्पर्श से शाप–मुक्त होना, आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना कल था। डॉ. शबाब ललित के ये शेर देखिए –

चट्टान को छुआ तो आदमी बना दिया
वह मोअजजे लिये फिरे है पाँव में।

हम थे संग जब उस ने छुआ पैकर–ओ–बशर में ढल गए।
बनी इंसान तेरे लम्स–ओ–पा–से चट्टानें थीं जो तेरी रहगुजर में। लम्स–
ओ–पा मिले उसका तो देख ले दुनिया
अन–गिनत अहिल्याएँ हैं असीर पत्थर में।
वह संग हूँ जो बशर बन सका न सदियों में
मेरी हयात्पे बद–दुआ का साया है।

एक अन्य चमत्कार है, राम नाम के पत्थरों का समुद्र में तैरना और पुल का निर्माण होना। डॉ. शबाब ललित का एक शेर है :

'शबाब' उस की नवाजिश से ना–उम्मीद न हो
जो पत्थरों को भी तैरा सके समन्दर में।

सीता स्वयंवर –

राम के शौर्य का प्रथम परिचय सीता स्वयंवर में मिलता है। राजा जनक अपनी पुत्री सीता का स्वयंवर आयोजित करते हैं तथा घोषित करते हैं कि जो कोई शिवधनुष को उठाने में सीता उसी को वरेंगी श्रीराम इस शौर्य परीक्षा में उत्तीर्ण होते हैं , सीता उन्हें वरमाला पहनाती हैं। उर्दू शायरी में कई स्थानों पर शायरों ने स्वयंवर के प्रसंग को काव्यबद्ध किया है। 'सलाम' संदेलवी राजा जनक द्वारा रखे गए धनुष की प्रशंसा में कहते हैं। रू

आकाश में बादल के ये टुकड़ों की चमक।

बल खाती हुई कौस–ओ–कजह की लचक।।
या भारी धनुष राजकुमारों के बीच।
लाये हैं स्वयंवर के लिए राजा जनक।।

'फरहत' लखनवी ने शिव धनुष के तोड़ने का वर्णन किया है। एक क्षण में राम ने जब धनुष को तोड़ डाला तो चारों ओर सन्नाटा छा गया.... मानव–पशु–पक्षी सब चकित रह गए :

करीब–ओ–कौस जब पहुंचे श्रीराम
कदम से दामन–ए–गुरा लिया थाम।
धनुष को तोड़ के फेंका जब जमीं पर
अंधेरा छा गया अर्शे–बरी पर।
हुए आसारे महशर, मच गया शोर
छुपे गोशों में मुर्ग–ओ–माही–ओ–मोर।
परिंदों के उड़े हाथों के तोते
यकायक चौंक उठे दरिया के सोते।

उर्दू शायरी और हिंदी काव्य की परंपरानुसार नायक के रूप–वर्णन का अपना महत्व है। 'फिराक' गोरखपुरी अपनी सजीली भाषा में स्वयंवर में उपस्थित श्रीराम के सौंदर्य का वर्णन कुछ इस प्रकार करते हैं :

यह हल्के–सलोने–सांवलेपन का समां
जमुना–जल में और आसमानों में कहाँ?
सीता स्वयंवर में पड़ा राम का अक्स
या चाँद से मुखड़े पे है जुल्फों का धुआँ ।।

राम ने राजा जनक की शर्त पूरी की। सीता ने पुलकित हो श्रीराम को जयमाल पहनाया।

'फरहत' लखनवी की शायरी में इस वर्णन का आनंद ही कुछ और है–

लिबास–ए–नौ–उरूसी जीनत–ए–बर
बसा इत्र–ओ–गुलाब–ओ–मुश्क–ओ–अंबर।
पसीने ने यह जेवर पर जिला की
हुई बू मोतियों में मोतिया की।
जनाब–ए–राम के पास आके फिलहाल
पिन्हा दी फूल कर, फूलों की माल ।

श्रीराम को जीवनसंगिनी मिली, सीता को स्वामी, श्सय्यद अफजल जाफरीश दिल और दिलबर के एक होने को शब्दबद्ध करते हैं :

इश्क ने मरकर स्वयंवर में इसे जीता है।
दिल श्रीराम है, दिलबर की रजा सीता हैं।

कैकेयी और दशरथः राजा दशरथ ने कभी कैकेयी को वचन दिया था कि उसकी दो इच्छाएँ पूरी करेंगे,उचित समय पर कैकेयी ने स्वपुत्र भरत के लिए राज्य तथा राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास माँगा। दशरथ, कैकेयी के प्रस्ताव पर पहले तो हतप्रभ रह गये ,फिर जल बिन मछली की भाँति तड़पने लगे।जगन्नाथ खुशतर ने राम के वहाँ पहुँचने और राजा दशरथ की व्याकुल अवस्था का चित्रण इस प्रकार खींचा है–

पिदर के समाने आये शताबां जो हाल –ए–पिदर देखा परीशां।
जमीं पर मुजतरिब हैं शक्ले–माही कहीं कलगी, कहीं है ताज–ओ–शाही।
जमीं पर इस तरह शाह का हाल हुमा गलतां है गोया बे– पर –ओ–बाल।

राम पिता की यह दशा देखकर व्याकुल हो जाते हैं तथा उन्हें सान्त्वना देते हैं,खुशतर ही के शब्दों में–

कहा तब राम ने बा –अशक बारी के है किस वास्ते ये सोमवारी।
जो हो तकसीर मेरी, वह अता हो बजा लाइं जो साहब की रजा हो।

कौशल्या का विलापः

उधर कौशल्या तक भी .खबर पहुँच जाती है। राम माँ के पास पहुँचते हैं और खामोश खड़े हो जाते हैं। पं0 ब्रज नारायण 'चकबस्त' ने रामकथा के इस दृश्य को निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया है। कौशल्या कहती हैं–

रोकर कहा, .खामोश खड़े क्यों हो मेरी जां?
मैं जानती हूँ जिस लिए आये हो तुम यहाँ ।
सब की खुशी यही है ,तो सेहरा को हो रवां
लेकिन मैं अपने मुँह से न हर्गिज कहूँगी हाँ।
किस तरह मैं आँख के तारे को भेज दूं
जोगी बना के राजदुलारे को भेज दूं।
लेती किसी .फकीर के घर में अगर जनम
होते न मेरी जान को सामान ये बहम।
डसता न साँप बन के मुझे शौकत–ओ–हशम
तुम मेरे लाल थे मुझे किस सल्तनत से कम।
मैं खुश हूँ फूंक दे कोई इस तख्त–ओ–ताज को
तुम ही नहीं तो आग लगाउँगी राज को।

श्रीराम माता का विलाप सुनकर द्रवित हो जाते हैं फिर अपने आप को संयत करके कहत हैं, 'चकबस्त' के शब्दों का रसास्वादन करेः

सुन कर जबां से माँ की यह फरियाद दर्द–खेज
इस .खस्ता–जां के दिल पे चली गम की तेग तेज।
आलम यह था करीब के आँखें हों अश्क–रे.ज
लेकिन हजार जब्त से रोने से की गुरेज।
सोचा यही के जान से बेकस गु.जर न जाये
नाशाद हमका देख के माँ और मर न जाये।।

राम अपने अश्रु पी जाते हैं और माँ को सान्त्वना देते हैं कि इसमें परवरदिगार की कोई मसलेहत होगी। यह अवश्य है कि वृद्धावस्था में यह बड़ा आघात है पर निश्चिंत रहिए, चौदह

वर्ष जल्द ही बीत जायेंगे। चकबस्त की कलम का कमाल उन की नज्म से उद्धृत है:

फिर अर्ज की यह मादर–ओ–नाशाद के हुजूर
मायूस क्यों हैं आप, अलम का है, क्यों वफूर।
सदमा यह, शोक, आलम–ओ–पीरी में है ज.रूर
लेकिन न दिल से कीजिए सब्र–ओ–क.रार दूर ।
शायद खिजां से शक्ल अयां हो बहार की
कुछ मसलेहत इसी में हो परवरदिगार की।।
और आप को तो कुछ भी नहीं रंज का म.काम
बाद–अे–स.फर वतन में हम आयेंगे शाद–काम।
होते हैं बात करने में चौदह बरस तमाम
कायम उम्मीद ही से, दुनिया है जिस का नाम ।
और यों कहीं भी रंज–बला से मफर नहीं
क्या होगा दो घड़ी में किसी को .खबर नहीं।।

'चकबस्त' ने बड़ी कुशलता से कौशल्या के दुख और राम के तर्कों का उल्लेख किया है।

ईश्वर पर विश्वास करने और परिस्थिति के साथ चलने का कहकर राम मां से कहते हैं कि

ईश्वर की कृपा रही तो वन भी माँ की गोद के समान स्नेही और वत्सल बन जायेगा, राम कहते हैं–

ये जाल, यह फरेब, ये साजिश, ये शोर–ओ–शर
होना जो है सब उस के, बहाने हैं सर–ब–सर ।
असबाब–ओ–जाहिरी है न उन पर करो नजर
क्या जाने क्या है परदा–ओ–कुदरत में जलवा–गर।
खास उस की मसलेहत कोई पहचानता नहीं
मंजूर क्या है उसे कोई जानता नहीं।
अपनी निगाह है, कर्म–ओ–कारसाज पर
सेहरा चमन बनेगा, वह है महरबां अगर।
जंगल हो या पहाड़ या समंदर हो के हो हजर
रहता नहीं वह हाल से बंदों के बे–खबर।
उस का करम शरीक अगर है तो गम नहीं
दामन–ओ–दश्त दामन–ओ–मादर से कम नहीं।

सीता का आग्रह:

राम को वनवास मिलने की सूचना से सीता पर पहाड़ टूट पड़ा। वह राम की अर्धांगिनी,

उन के सुख–दुख की साथी, उन के बिना रहने की कल्पना भी नहीं कर सकती थीं। उन्होंने

राम के साथ वन जाने का निश्चय कर लिया। सीता के आग्रह का शंकर दयाल 'फरहत' ने

कुशलता से चित्रण किया है:

जनाब–ओ–जानकी ने जब सुना हाल, तो जोश–ओ–गिरयां से आँखें हुई लाला
न था जब्त–शकेबाई का या हुई शौहर की फुरकत ना–गवार।
हया ने आगे को दामन लिया थाम मगर जोश–अे––मुहब्बत ने किया
खयाल आया के हमराही में रहिए सबा बन के हवा–ख्याही में रहिए।

'अध्यात्म रामायण' के अयोध्याकांड में गुरु नारायण न सीता की व्यथा प्रभावी रूप में प्रस्तुत की है:

चले हो बन को बता दो स्वामी अकेले, क्यों मुझ को छोड़ कर।
जिउँगी फुरकत में कब भला, ऐश होंगे क्या ये जमाने भर।
सफर है दुश्वार सख्त मुश्किल, करोगे तै किस तरह से मंजिल
न होंगे बर्दाश्त माह–ओ–कामिल,अजाब तुम से कभी सफर के।
तुम्हारे दीदार से मैं रघुबर, रहूँगी तकलीफ में भी .खुशतर।
बनेंगे काँटे कभी गुल–अे–तर, कभी वो जेवर बनेंगे सिर के।

'सरवर जहांबादी' ने सीता के निश्चय अर्थात् राम के साथ वनवास जाने के निर्णय का वर्णन किया है:

हमराह बन को, मुझे नाथ ले चलो।
रेखा तुम्हारे चरणों की हूँ साथ ले चलो।
सदमे तुम्हारे हिज्र के क्योंकर उठायूँगी।
मैं मर मिटूंगी दुख जो यह दम भर उठायूँगी।
सेहरा मुझे चमन है रफाकत में आप की।
दुनिया के सारे ऐश हैं .खिदमत में आप की।
पलकों से राह दश्त की झाड़ा करूँगी मैं।
दासी हूँ ल चलो मुझे, सेवा करूँगी मैं।

राम वनवास:

राम वनवास को उर्दू के शायरों ने कई स्थानों पर कई अर्थों में काव्यबद्ध किया है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved 

वनवास की लंबी अवधि के कड़वे–मीठे अनुभव, हर युग की प्रासंगिकता इन शेरों में स्पष्ट लक्षित होती है–

हर लिया है किस ने सीता को
जिंदगी है के राम का बनवास। (फिराक गोरखपुरी)

अपनी किस्मत में चौदह बरस का नहीं
मुस्तकिल़ जिंदगी भर का बनवास है। (प्रेम वारबर्टनी)

राम–सीता तो बन में घूमे थे
हम तो भटके हैं दर–ब–दर बाबा। (प्रेम वारबर्टनी)

उजड़ी–उजड़ी हर आस लगे़
जिन्दगी राम का बन–बास लगे। (जांन निसार अख्त़र)

वह नन्ही सी ख्व़ाहिश अब भी दिल को जलाये रखती है
जिस के त्याग की ख़ातिर मैंने कितने ही बनवास लिए।
(रिफअत सरोश)

आशियां की लज्ज़तों में अटकता हुआ बदन
और रूह का खिंचाव है बनवास की तरफ। (आदिल मंसूरी)

जिस तरफ देखिये सेहरा नजर आता है मुझे
अन–गिनत सदियों का बनवास डराता है मुझे।
(सुल्तान अख़्तर)

घर मिला है जिस्म के जंगल में चौदह साल बाद
जिस में दो मुठ्ठी हुआ है हाथ भर का आसमां ।
(मुजफ्फर हनफी)

'डॉ. शबाब ललित' की शायरी में रामायण की इस घटना अर्थात् बनवास की प्रासंगिकता के उत्तम उदाहरण मिलते हैं। रिश्तों की अयोध्या, बनवास के काँटे, रूह का बनवास जैसी महत्वपूर्ण सुंदर शब्दावली के दर्शन निम्नलिखित पंक्तियों में होते है :

कोई दिन में ये रिश्तों की अयोध्या छोड़नी होगी
नजर आने लगे ख्व़ाबों में फिर बनबास के काँटे ।

अयोध्या के गुलिस्तानों में लौटे मुद्दतें गुजरी
मगर चीखते हैं तलुओं में अभी बनबास के काँटे।

कटे जो रूह का बनबास तो वह शख्स़ मिले
जो दिल के पास रहे और आँख से रहे दूर।

आज स्थिति यह है कि संतान–पिता को बनबास देती है। रामायण में एक पिता ने विवश होकर पुत्र को वनवास दिया था, आज अपने सुख के लिए पुत्र पिता को घर से निकाल देते हैं।

'शबाब ललित' वृद्ध–पीड़ा को रामायण के संबंध में यो मुखर करते हैं :

नई सदी में ठहरा है यह फर्ज दशरथ का
के अपनी जिंदगी बनबास में बसर करे
तथा बनबास दो अब घर के बड़े–बूढों को
अब घर में कोई चीज पुरानी न रहे

मुंशी जगन्नाथ 'खुशतर' ने राम के बन को प्रस्थान करने का करुण दृश्य पद्यबद्ध किया है.....माँ–पिता,सगे–संबंधी, प्रजा, पशु–पक्षी, रो–रो कर बेहाल हो रहे हैं :

किया गम से सहर ने पैरहन चाक
उड़ाई सिर पे अपने शाम ने ख़ाक।
जहां गियाँ था सब आहो–फुगां से
फरिश्ते गुल–फिशां थे आसमां से।
जमीं पर शाह था इस तरह बेताब
के हो जिस तरह से आतिश पे सीमाब।
लहू था हर बुने–मिजगां से जारी
पसंद आंखों को आई अश्क–बारी।
अवध में जाग नालां, बन में बुलबुल
उगे कांटे यहाँ फूले वहाँ गुल।
चले जिस दम अवध से राम लछमन
गिरा लंका में सिर से ताजे रावण।

अंततः राम, सीता और लक्ष्मण बन को प्रस्थान करते हैं। राजा दशरथ सुमंत को साथ भेजते हैं कि कुछ समय के पश्चात् राम को समझा–बुझा कर वापस ले आएं। पर राम सुमंत के आग्रह को स्वीकार नहीं करते, वापस लौटने से इंकार कर देते हैं। सुमंत को अ गया कर राजा दशरथ की जो दशा होती है उसे 'सरवर जहांनाबादी' ने यो प्रकट किया है :

बन से अयोध्या के फिरा खाली हाथ तू
लाया न लक्ष्मण को, न सीता को साथ तू।
छोड़ आया मेरे फूलों को, किस बन में आह तू
ले चल मुझे भी, दश्त के दामन में आह तू।
आँखें कंवल सी हैं, कफ–ओ–पा यासमन के फूल
कुम्हला न जायें दश्त में मेरे चमन के फूल।
पुरनूर, आह मेरी शबिसतां थी राम से
पीरी की सुबह गुनचा–ओ–खंदां थी राम से।
बन में जो राम हैं तो अयोध्या उदास है
कौशल्या गरीब भी क्या ही उदास है।

राम–भरत मिलन :

रामायण में रिश्तों की पवित्रता की छटा चारसू बिखरी हुई है। अनेक शायरों ने रिश्तों के इन रंगों से पाठकों को अभिभूत किया है। नाजिश प्रतापगढ़ी की रचनाओं से कुछ उदाहरण पर्याप्त होंगे, जहाँ पुत्र, भाई ,पत्नी, सब आदर्श के शिखर पर नजर आते हैं–

हम में भाई है भरत तो कोई लछमन,
कोई बेटा जो है राम तो कोई है श्रवण।
बीवी के रूप में सीता की वफाओं का चलन
प्यार की आखि़री हद है दिल–ए–राधा की लगन।
जीस्त को फर्ज का एहसास दिया करते हैं।
बाप के हुक्म पे बनबास लिया करते है।

चित्रकूट के वन में राम, सीता और लक्ष्मण जी के साथ ठहरे हुए रुख्सत करने वाली प्रजा भी साथ थी। इसी समय भरत,राम को वापस ले जाने के लिए आते हैं। राम और भरत के मिलन का मार्मिक दृश्य श्वायसराय वहमीश ने खींचा है –

राम का रूख़ था जिधर, उस के उकब से आए थे
इसलिए उन को नजर ये लोग आते थे कहाँ।
करते हैं प्रणाम आका आपको यह भरत जी
सुनते ही उल्फत में डूबा राम का दिले ना–गहाँ ।
वह उठे अपनी जगह से हो के कुछ बे–हाल से
इक जगह कपड़े गिरे और इक जगह तीर–ओ–कमाँ ।
राम ने उनको जबरदस्ती उठाया अर्ज से
देख कर दोनों का मिलना लोग थे हैरत–जदा।
बल्कि शायर के लिए मुश्किल है वह लिखना समां।

शूर्पनखा कांड :

वनवास के दौरान राम की अनुपस्थिति में सीता की सुरक्षा की जिम्मेदारी लक्ष्मण पर है। लक्ष्मण कर्तव्य का पालन करते हैं। रावण की बहन शूर्पणखा, शूर्पणखा, लक्ष्मण को देखती है और प्रेम निवेदन करती है। राम के प्रति भी आसक्ति व्यक्त करती है। लक्ष्मण क्रोधित होकर उसकी नाक काट देते हैं और राम–रावण युद्ध की बुनियाद पड़ जाती है। यह शूर्पणखा की वासना थी जिसने भाई रावण को सीता के सौंदर्य से ललचाया। यह रावण की वासना थी जिसने सोने की लंका को राख कर दिया। श्डॉ. शबाब ललितश ने अलग–अलग शेरों में शूर्पणखा कांड का वर्णन किया है :

गला न छोड़ेगी यह वासना की शूर्पणखा
हजार हम दिल–ए–वहशी को राम कर लेंगे।
मैं कोई राम न था, आम सा बशर था
हवस की शूर्पणखा थी मेरे तआकुब में।
एक ही रावण था, दिल हर्गिज न आया राह पर
गला न छोड़ेगी यह वासना की शूर्पणखा
हजार हम दिल–ए–वहशी को राम कर लेंगे।
मैं कोई राम न था, आम सा बशर था
हवस की शूर्पणखा थी मेरे तआकुब में।
एक ही रावण था, दिल हर्गिज न आया राह पर
वासना के फेर में सोने की लंका जल गई।
गजब की आग लगी है बदन की लंका में
यह रंग लाया है रावण की वासना का फतूर।

स्वर्णमृग :

रामायण की मुख्य घटना सीता–हरण पर कई शायरों ने या तो नज्में लिखी हैं अथवा स्वर्णमृग–रूपी मारीच को अलामत के तौर पर प्रयोग किया है। मारीच वास्तव में मोह का प्रतीक है जो बुद्धिमान और ज्ञानी का भी भटका देता है। कृष्ण मोहन ज्ञान–ध्यान के बैरी को इस प्रकार काव्यबद्ध करते हैं –

माया मोहित, चंचल बेकल, ज्ञान–ध्यान का बैरी।
काया पर भरमाया है मन, काया के गुण गाए।

मुंशी बनवारी लाल 'शोला' ने 'सीता–हरण' नज्म में इस प्रसंग का विस्तार से वर्णित किया है–

इतने में एक आहू–ओ–जीं पड़ा नजर
खुश–रंग रूप, जिस्म तिलाकार सीम–बर।
जंगल में सामने से गुजर कर निकल चला
करता हुआ कलोल उभर कर निकल चला।
देखा उसे सिया ने तो कुछ जी लुभा गया
आबू का मृग नयन को अंदाज भा गया।
रघुवर से बोलीं देख के, आहा है क्या हिरण !
क्या रंग मीनाकार है क्या खुशनुमा बदन !
हे नाथ लाओ गर ये गजाल–खतन मिले
क्या अच्छा मृग–छाला हो जो यह हिरण मिले।

सीता का आग्रह राम टालते नहीं और सब मुछ जानते हुए भी मृग के पीछे चल देते हैं –

रघुराय सुन के इतना, उठे, मुस्करा चले
तीर–ओ–कमां को दोश के ऊपर सजा चले।
माया रची हुई थी कहाँ का शिकार था ?
सब जानते थे आप जो कुछ होनहार था।

रामचंद्र जी मृग पर तीर चलाते हैं। कपटी मारीच तीर खाकर राम के स्वर में लक्ष्मण को सहायता के लिए पुकारता है।

खाते ही तीर धरती पे गिर गया
'भाई लखन चलो' यह सदा दे के गिर गया।

सीता, पति की चीत्कार सुन व्याकुल हो जाती हैं और लक्ष्मण को राम के सहायतार्थ जाने को कहती हैं –

आवाज सुन के जानकी व्याकुल हुई इधर
बोली लखन से जल्दी से भाई की लो खबर।
तुमको पुकारते हैं कोई बात है मगर
आवाज उधर से आई है स्वामी गए जिधर।

लक्ष्मण भाभी को समझाते हैं कि सारे जग के स्वामी राम को कोई ख़तरा नहीं हो सकता –

बोले लखन सिया से, यह चरणों में धर के सिर
एक सहल सा शिकार था माता, नहीं खतर।
हैं रामचंद्र मालिके–कौनैन–बहर–ओ–बर
सब की खबर जो लेते हैं कौन उन की ले खबर।
माना श्री सिया ने लखन का न इक वचन
ताने भरे जवाब दिये क्या ही दिल–शिकन।

लक्ष्मण रेखा :

लक्ष्मण रेखा की लाक्षणिकता का उर्दू शायरों ने प्रचुरता से प्रयोग किया है। 'मुजफ्फर हनफी' ने वर्तमान समय की जटिल परिस्थितियों की लक्ष्मण रेखा को विकास में बाधक माना है–

ऊपर–नीचे, आगे–पीछे,दाएँ –बाएँ रोक
जनता की लक्ष्मण–रेखाओं आगे जाने दो।

'कैफी आजमी' ने जीवन को अनेक पाबंदियों अर्थात् लक्ष्मण–रेखाओं में कैद मानकर यह
इच्छा व्यक्त की है कि कोई रावण आये तो इस कैद से मुक्ति मिलेः

चंद रेखाओं की सीमाओं में जिंदगी कैद है सीता की तरह।
राम कब लौटेंगे मालूम नहीं काशा रावण ही कोई आ जाता।

मुंशी बनवारी लाल शशोलाश सीता के आग्रह पर लक्ष्मण के प्रस्थान और लक्ष्मण रेखा का वर्णन करते हुए कहते हैं –

आखरि लखन उठे, लिया धनुष्यबाण को संवार
हलका श्री सिया का किया खींच के हिसार।
बाहर चरण न रखना, ये समझाके बार–बार
अंगड़ाई ले के शेर बढ़ा जानिबे–शिकार।

लक्ष्मण रेखा, भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण धरोहर है। आज के युग में यह प्रसंग उतना ही महत्वपूर्ण है जितना रामायण काल में था। स्त्री–स्वतंत्रता, सक्षमता के इस दौर में एक लक्ष्मण रेखा प्रत्येक स्त्री अपने आगे स्वयं खींचे रखती है जो उसकी रक्षा करता है। प्रस्तुत हैं कुछ उदाहरण –

मैं जहाँ भी जाऊँ उस की लक्ष्मण रेखा में हूँ
हाँ, कोई करता है मेरी पासबानी हर तरफ।
तुम्हारी याद की पाकीजा लक्ष्मण रेखा
मुझे बचाती रही एक पासबां की तरह।
कोई हद न रही उसकी परेशानी की
लक्ष्मण–रेखा से जो जब्त की बाहर निकला।
इक न इक दिन रावण उन्हें हर ले गया
सब्र की सरहद से जो पार गईं।
सरहदे–सब्रो–किनाअत को जो न पार करें
ऐसी सीताओं को रावण कोई हरता ही नहीं।

सीता हरण :

रावण तो इसी ताक में था कि लक्ष्मण हटें और वह सीता का हरण करे। 'सलाम संदेलवी' इस प्रसंग को निम्नलिखित रूप से काव्य का रूप देते हैं–

तारों से वह आकाश का चेहरा रौशन
वह चाँद के पास अब्रे–सियाह का दामन।
या माँग रहा है हाथ फैलाये भीख
सीता से कुटी के पास आकर रावण।

बनवारी लाल शोला सीता हरण के प्रसंग को शेरों में यों पेश करते हैं –

पड़ता कहीं भी फर्क है दाना की बात में
रावण लगा हुआ था यहाँ अपनी घात में।
मौके की ताक में था वह चालाक पुर–गरूर
फिर ब्राह्मण का रूप लेके गया सिया के हुजूर।
वह कंद–मूल–फल जो लगीं देने दिल–पजीर
बोला श्री सिया से भिखारी सियाह ह–जमीर।
देनी अगर है भीख तो दो छोड़ कर लकीर
भिक्षा बंधी हुई नहीं लेते कभी फकीर।
बाहर जो कुंडली से चली, धोखा खा गई
रावण के छल में हाय ! महारानी आ गई।

पं. बशेश्वर प्रसाद 'मुनव्वर' लखनवी सीता की मनस्थिति का वर्णन करते हुए कहते हैं, कि दानशील, दयालु, सीता के आगे कोई हाथ फैलाए और वह दान न दें ऐसा कठिन था इसलिए सीता ने लक्ष्मण रेखा पार की –

जंगल में था फकीर की इमदाद का ख्याल
देती न दान राजकुमारी यह था मुहाल।
मासूमियत से कुछ न समझ पाई उस की चाल
सीता उठीं के रद न ब्राह्मण का हो सवाल।
दरमाने–ओ–ब–नवाई–ओ–दरवेश कर दिया
जो कुछ था पास अदब से उसे पेश कर दिया।

'तमन्ना' लखनवी ने रावण के भेस बदलने से लेकर भिक्षा माँगने और सीता का अपहरण करके लेकर भागने का प्रसंग पद्यबद्ध किया है :

शक्ल अपनी बदल ब हीला–वफन
अच्छा–खासा बना ब्राह्मण।
जिन्नार गले से ता कमर था
कशका संदल का माथे पर था।
हस–मामूल कुछ दुआ कर
सोता के करीब बोला आकर।
है फाका–कशी से गम निहायत
हाजिर हो तो कुछ करो इनायत।
सीता जी तरस उस पे खाकर
देने लगीं फल उसे बुलाकर।
वह बोला के खत से होके बाहर
दो फल, के हो फल तुम्हें बराबर।
हद से बढ़ा जो कदम सिया का
रावण उन्हें लेके वां से भागा।

राम का विलापः

रावण सीता का हरण कर लंका ले जाता है। राम व्याकुल होकर हरेक से सीता का पता पूछते हैं। 'मुंशी त्रिलोक चंद' 'महरुम' ने राम की इस स्थिति का वर्णन किया है :

कोहसार में वह आईना–ओ–सीमा नहीं मिलता
सेहरा में कहीं नक्श–ओ–कफ–ओ–पा नहीं मिलता।
गुलजार म मेरा गुल–ओ–राना नहीं मिलता
दरिया में भी वह गौहर–ओ–यकता नहीं मिलता।
अब और भी वीरां हुआ वीरान हमारा
पहले भी था वीराने में काशाना हमारा।
आश्रम की सम्त आए जल्द तर
आह निकली घर को सूना देखकर।
रामजी करने लगे वां हाय –हाय
दर्द का इजहार वह न देखा जाय
ऐ वसफो की मअदन जानकी
छोड़ कर मुझे किस जां गई।

जटायु का बलिदान :

रावण जब आकाश मार्ग से सीता को ले जा रहा होता है, उस समय जटायु उसे रोकता है। सीता को छुड़ाने का प्रयत्न करता है पर महाबली रावण के आगे वह हार जाता है। 'डॉ. शबाब ललित' ने जटायु को अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने वाला, सत्य के लिए जीवन बलिदान करने वाला नायक ठहराया है –

लड़ूंगा जुल्म से जब तक हैं बाल–ओ–पर बाकी
जटायु की तरह रावण से जूझ जाता हूँ मैं।
उसी का सर है फक्त तेरी गोद के शायां
जटायु की तरह कुर्बान जो बाल–ओ–पर कर दें।
उस की आगोश में दम टूटता मेरा भी 'शबाब'
पंख अगर मैं भी कटा सकता जटायु की तरह ।

शबरी और रामः

यों रामायण अनेकविध घटनाओं से भरी पड़ी है और अलग–अलग शायरों ने अलग– अलग घटनाओं को काव्य में बरतने के लिए चुना है पर कुछ घटनाएँ, ऐसी हैं जो को लेती है। शबरी का प्रसंग ऐसा ही प्रसंग है। श्री राम अपने भक्तों की श्रद्धा पर विश्वास करते हैं, उनकी भावनाओं की कद्र करते हैं। पंडित ब्रजमोहन दत्तात्रय श्कैफीश ने एक नज्म में इस प्रसंग का वर्णन किया है –

यह देख के जो हाल हुआ रामचंद्र का
मुमकिन नहीं जबान–ओ–कलम कर सके अदा।
पास उस के जा के बैठा अयोध्या का बादशाह
वह दिल की कैफियत थी कि मुँह था सिला हुआ।
इक जानू पर थे शबरी का सिर लिये
सीता का दूसरे से सिरहाना किये हुए।
एक–एक बूँद राम की हर आँख से गिरी
सीता के और शबरी के सिर पर वह पड़ी।
अंगड़ाई लेके होश में आई वह भीलनी
सीता का इश्क भी दूर हुआ, आँख खोल दी।
पूछा यह जानकी ने किधर को हम आ गये
और शबरी ने उठके कदम राम के लिए।

लंका दहन :

रावण सीता को 'अशाक वाटिका' में कैद कर देता है। नफीस खलीली वहाँ उदास बैठी सीता की तस्वीर कुछ यों खींचते हैं–

रूख जर्द मिसले जाफरां
हैरान है आईना सां।
देखो जो चश्म–ओ–दूरबीं
खा जाये धोखा, है यकीं।
तसवीर है इक कागजी
बस खत्म है कारीगरी।
परमात्मा ऐसा करे
बस जान इसमें डाल दे।

रामभक्त हनुमान सीता को खोजने हुए अशोक वाटिका में पहुँच जाते हैं। रावण को पता चलता है तो वह सैनिकों द्वारा उन्हें काबू में कर लेता है तथा उन की पूंछ जलाने का दंड उन्हें देता है। कवि 'वायसराय वहमी' ने इस प्रसंग को काव्यबद्ध किया है –

हंस के रावण ने कहा के उजू इस का काट दो।
और लंका से करो वापस इस बंदर को रवां।
दुम हुआ करती है बन्दर को निहायत ही अजीज।
तेल में कपड़ा भिगो के रख दो दुम के दरम्यां।
आग से रौशन करो, बे–दुम के जब हो जायेगा।
अपने मालिक को वह कैसे लायेगा देखू यहाँ।
हुक्म की तामील में दौड़े गए सब राक्षस।
और फराहम करके कपड़ा लाए और रौगन वहाँ।
बाँध कर दुम में लगादी आग सब के सामने।
देखने को यह तमाशा लोग आए सब वहाँ।

राम–रावण युद्धः

सीताहरण के पश्चात् रामायण में राम–रावण संघर्ष आरंभ होता है जो रावण पर राम की विजय तक चलता है। उर्दू शायरों ने राम, रावण, बाली आदि का शायरी में प्रचुरता से प्रयोग किया है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत है–

तमाम जोर मेरा आईने ने छीन लिया
कहाँ से राम ने बाली पे तीर मारा है।
–मुजफ्फर हनफी
लक्ष्मण का दिल है शिद्दत–ओ–गम से फटा हुआ
दर पर है रामचंद्र के रावण डटा हुआ।
मंशा है ताज रावण–ओ–दोजख मकाम को
जिल्लत की घाटियों में गिराया है राम को।
–'जोश' मलीहाबादी

'इंद्र स्वरूप' 'फारान' कहते हैं कि राम की सेना देखते ही रावण की पराजय का संकेत मिल गया था –

काले देव की नगरी अपनी मौत की हामिल है
राम का लश्कर देख के हमको, रावण का सिर याद आया।

लक्ष्मण मूर्छा :

राम के प्रिय भाई लक्ष्मण जब युद्धक्षेत्र में मेघनाद के तीर से मूर्छित हो जाते हैं, तब राम की दशा घायल हिरणी जैसी हो जाती है। सत्यप्रकाश महताब राम की पीड़ा का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि लक्ष्मण की मूर्छा से रावण के घर में खुशियाँ मनाई जायेंगी पर इनकी दुनिया उजड़ गई है –

ना–गहां तीर पहलू–ए–लछमन पर जो लगा
इक आह सर्द भर के यह रघुबर ने फिर कहा।
किसमत ने मुझ को आलमे–गुर्बत में गम दिया
जादू जो मेघनाद का लछमन पे चल गया।
मुझ से हर्जी व जार का उजड़ा है बाग आज
रावण के घर में जल गए घी के चिराग आज।

'प्रेम पाल अश्क' उस दृश्य को रेखांकित करते हैं, जब हनुमान संजीवनी बूटी लाते हैं। बूटी द्वारा लक्ष्मण की मूर्छा खत्म होती है। होश में लक्ष्मण आते हैं, जीवन राम को मिलता है –

दुआ भी बा–असर हुई, दवा भी कारगर हुई
संजीवनी के फैज से मिली लखन को जिंदगी।
मिली लखन को जिंदगी, हयात राम को मिली
चमन–चमन महक उठा, कली–कली चिटक उठी।
खिंजा का दौर लद गया, बहार को गुरूर था
दिलों में थी खुशी नजर–नजर में नूर था।

' डॉ. शबाब ललित' के निम्नलिखित शेरों में नये रंग प्रसंग को वर्णित किया गया है

पड़ा है कब से सदाकत का लक्ष्मण बेहोश
खुदा करे कोई संजीवनी असर कर दे।

सीता की अग्निपरीक्षा :

राम–रावण युद्ध में राम की विजय होती है। बनबास की अवधि पूरी होने पर वह सीता के साथ अयोध्या लौटते हैं और सुखपूर्वक राज्य चलाने लगते हैं..... पर प्रजा सीता के सतीत्व पर प्रश्न उठाती है–

रुसवाई का गम क्या कीजे, जग ने किसी को बख्शा है।
सीता जैसी सती पे भी तोहमत थी लगाई लोगों ने।

स्त्री के सतीत्व की अग्निपरीक्षा के प्रश्न की प्रासंगिकता आज भी यथावत् है। आज भी पुरुष प्रधान समाज में अग्निपरीक्षा ली जाती है। ऐसी ही कुप्रथाओं के कारण भारतीय समाज आज भी पिछड़ा हुआ है। इन विवश महिलाओं का प्रतिनिधित्व इन पंक्तियों में हुआ हैः

मेरे उसूलों को अग्निपरीक्षा में न डाल
के वक्त तुर्का–सितम–गर है, आदमी मजबूर।

सीता निर्दोष हैं। इसलिए धधकती ज्वाला से सुरक्षित निकल जाती हैं। उनका

स्वागत करने वालों में राम सबसे आगे थे। ‘जोहरा निगार’ ने इस प्रसंग का अत्यंत सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है :

सिया को देखे सारा गाँव, आग पे कैसे धरेगी पाँव।
बच जाए तो देवी माँ है, जल जाए तो पापिन।
जिस का रूप जगत की ठंडक, अग्री उस का दर्पण।।
अग्रीपर उतर के सीता, जीत गई विश्वास।
देख दोनों हाथ बढ़ाए, राम खड़े थे पास।
उस दिन से अस्तित्व में आया, सचमुच का विश्वास।

राम पुराण, राम गाथा अथवा रामायण समाप्त हो गई। अब न वह मर्यादा पुरुष हैं ,न भ्रातृभक्त लक्ष्मण और ,भरत, न हनुमान जैसे स्वामिभक्त हैं ,न कौशल्या जैसी स्नेही माँ। सरदार जाफरी मसनवी जम्हूर में इस बात पर खेद व्यक्त करते हैं कि अब ऐसे लोग संसार से खत्म हो गये हैं –

न वह राम की तमकनत और वकार
न लक्ष्मण की उलफत न सीता का प्यार।

संदर्भ


असगर वजाहत –‘उर्दू में सांस्कृतिक प्रतीक’, दिल्ली
आबिद हुसैन हैदरी २००५ ‘रामायण उर्दू में।’ जबान–ओ–अदब, पटना।
इकबाल अहमद १६६३ ‘सांस्कृतिक एकता का गुलदस्ता’। दिल्ली प्रकाशन विभाग।
गुरु नारायण १६५८ अध्यात्म रामायण।श इलाहाबाद हिंदुस्तानी एकेडमी।
जगन्नाथ ‘खुश्तर’–‘रामायण खुश्तर’। हैदराबाद
जयकृष्ण चौधरी १६७२ ‘तुलसी की रामायण और उर्दू शायरी’
तामीर–ए–हरियाणा। चण्डीगढ़, मार्च।
पं. महादेव शास्त्री जोशी (संपा.) –‘भारतीय संस्कृति कोष’ भाग ८।
मजहर आलम सिद्दिकी १६७२‘श्रीराम की शख्सियत उर्दू शायरी के आईने मे।’
करितास, नागपुर ।सितंबर–अक्टूबर।
मुजफ्फर हनफी १६८३ राम की अजमत और उर्दू शायरी’ तामोर–ए–हरियाणा,मार्च
मुनव्वर लखनवी १६३१ ‘रामायण वाल्मीकि बातसवीर’।
मुंशी सूरज नारायण १६१४ ‘रामायण नंबर’ । दिल्ली। साधु प्रेस ‘मेहर’ देहलवी
मेहताब सिखरी १६६८ ‘लछमन मूर्छा।’ माहनामा, ओम दिल्ली
बांके बिहारीलाल १८८६ ‘रामायण बहार’ । लखनऊ। ‘बहार’ नवल किशोर प्रेस।
(डॉ.) बानो सरताज २००१ ‘राष्ट्रीय एकता और उर्दू शायरी’। दिल्ली, निराली दुनिया पब्लीकेशन्स।
२००६ ‘उर्दू शायरी में भारतीयता’ । दिल्ली। अमन प्रकाशन ।
राम पंडित १६१६ राम पंडित नंबर। तकमील भिवंडी जनवरी से दिसंबर।
(डॉ) शबाब ललित १६६६‘मुनव्वर लखनवी रू एक मुतालेआ’ दिल्ली, मॉडर्न पब्लिशिंग हाऊस।
(डॉ) सय्यद यहया २००८‘उस्तूरी फिक्र–ओ–फलसफा’ पुणे .नशीत उसूल पब्लिकेशंस।
हकीम वायसराय वहमी १६६० ‘रामायण मंजूम’ हैदराबाद।